F-5
D.El.Ed-1st year

इकाई-III

Date:-30.04.20

Topic:- बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता और भाषायी ज्ञान की समझ

→ **भाषा सीखने की क्षमता:-** भाषा सीखने की क्षमता निम्नलिखित चार प्रमुख तत्वों पर निर्भर करती है—

(i) आवश्यकता → सीखने वालों की जरूरतों और सीखने की तत्परता ही सीखने की कोटि को निर्धारित करती है।

(ii) तत्परता → बालक की शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता तथा उसके पूर्व अनुभव अधिगम के लिए उसे तत्पर बनाते हैं। सीखने के उद्देश्यों की प्राप्ति में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

(iii) परिस्थिति → सीखने की प्रक्रिया में सीखने की परिस्थितियों का विशेष महत्व है। सीखने की विशेष परिस्थितियाँ ही सीखने का सार्थक माहौल बनाती है।

(iv) अन्तः क्रिया → बालक की जरूरतों तथा सीखने की परिस्थिति में ही अध्यापक एवं अन्य विद्वानों के साथ अन्तः क्रिया रहता है।

⇒ **भाषायी ज्ञान की समझ:-** हमारी भाषा की कक्षाओं में जिस तरह बच्चों के भाषा-विकास के प्रति चिंता व्यक्त की जाती है वह इस ओर संकेत करती है कि हम बच्चों की भाषायी क्षमता के बारे में ठीक-ठीक आकलन नहीं कर पा रहे। एक बच्चा अपने छोटे भाई को बहलाकर उससे कोई चीज हासिल कर लेता है, तो भाषा के सहारे। वह भी कुछ इस तरह - 'अरे' देखो ये तो खराब है, अरे, इसमें तो मिट्टी लगी है लाओ धोकर लाता हूँ। ऐसे अनेक उदाहरण हमें अपने आस-पास देखने को मिल जाएँगे।

*भोजपुरी भाषा में बातचीत

रुखसाना — कहवाँ जा तारऽ नौसाद ?

नौशाद — तरकारी कीने। तू कहवाँ जा तारु ?

रुखसाना — घरे जात बानी। तहरा घरे के लोग के का हाल-चाल बा ?

नौशाद — सभे अच्छा बा। तू जवन झोरा ले ले बाड़ू उ एकदम करिया कुच-कुच बा। कहाँ से किनले बाड़ु ?

रुखसाना — भईया परदेस से भेजले रहलन। आज इस्कूल जइबऽ ? हमरा कलास के कुल्ह लड़का-लड़की जइहे।

नौसाद — ना, काल्ह गइल रहनी तऽ मास्टर साहेब से छुट्टी माँग लेल्नी। आज ना जायेब।

P.T.O